लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

जायसी कृत पद्मावत

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

* पद्मावत :- मलिक मुहम्मद जायसीकृत 'पद्मावत' (1540) को इस परंपरा प्रेमाश्रयी भक्ति-धारा की एक प्रौढ़ कृति है। यह महाकाव्य लोकभाषा में प्रणीत है। इसमें चित्तौड़ के राजा रत्नसेन एवं सिंहल की राजकुमारी पद्मावती के प्रेमविवाह एवं विवाहोत्तर जीवन का चित्रण मार्मिक रूप में हुआ है। कवि की मूल दृष्टि सूफी संत पर है।

डॉ० तारकनाथ बाली के शब्दों में :- 'पद्मावत' मूलतः रोमांचक शैली का कथा काव्य है, किन्तु आलोचकों ने इसे आदर्शपरक महाकाव्यों की कसौटी पर कसने का प्रयास किया, फलस्वरूप उन्हें निराशा का सामना करना पड़ा। कुछ विद्वानों ने कथा-काव्य और महाकाव्य की मूल चेतना एवं पद्धति के सूक्ष्म अंतर को समझे बिना ही बलात इसे महाकाव्य सिद्ध करने का प्रयास भी किया है। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने, जिनके लिए भारतीयता का आदर्श एकमात्र राम का एकपत्नीत्व एवं सीता का पातिव्रत्य है, इसकी प्रेमपद्धति को सर्वथा विदेशी एवं इसके प्रतिपाद्य को सूफीनाम घोषित कर दिया है। यह आश्चर्य की बात है कि जिस काव्य में नायक हिन्दू है जो नाथपंथी वेश में घर से निकलता है तथा जो शिव-पार्वती की सहायता से अपने लक्ष्य में सफल होता है, वह सूफीमत का संदेश किस प्रकार विज्ञापित कर पाता है। यदि पद्मावतकार के दृष्टिकोण में कहीं भी सांप्रदायिकता या मतप्रचार की भावना होती तो वह अपने ही धर्म-भ्राता अलाउद्दीन को शैतान का

प्रतिनिधि नहीं बनाता। कवि ने अपना प्रयोजन स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करते हुए लिखा है -

"औ मन जानि कवित अस कीन्हा,
मकु यह रहै जगत मन चीन्हा।"

अर्थात् जगत में अपना चिन्ह छोड़ जाने के लिए यह काव्य लिखा गया है, किन्तु फिर भी यह भ्रांत धारणा प्रचलित है कि इसकी रचना सूफीमत के प्रचार के उद्देश्य से हुई थी। 'पद्मावत' के विभिन्न दार्शनिक तत्वों के भी प्रतीक हैं। इस दृष्टि से इसे रूपक-काव्य भी कहा जा सकता है। आचार्य शुक्ल ने जायसी के प्रतीकार्थों को तोड़-मरोड़ कर उन्हें ऐसा रूप देने की चेष्टा की, जिससे कि इस रूपक से भारतीय निर्गुणसाधना के स्थान पर सूफीसाधना की व्यंजना हो सके। जायसी ने रत्नसेन को मन का प्रतीक माना था, शुक्ल जी ने उसे आत्मा का प्रतीक बना दिया, कवि के अनुसार पद्मावती केवल सात्विक बुद्धि की प्रतीक थी, जबकि शुक्ल जी ने उसे 'बुद्धि अर्थात् परमात्मा' का प्रतीक बना दिया। पद्मावती के सौन्दर्य, नागमती के विरह, रत्नसेन के साहस, त्याग एवं शौर्य की व्यंजना इसमें अत्यंत प्रभावोत्पादक शैली में हुई है। संपूर्ण काव्य में सूफी मान्यताओं के अनुसार प्रेम की अभिव्यंजना की गई है -

"मानुष प्रेम भएउ बैकुंठी।
नाहिं त काह छार एक मूठी॥"

प्रेम आकाश से भी ऊँचा और विराट है -

"गगन दिसिट सौं जाई पहुँचा।
प्रेम अदिपट गगन सौं ऊँचा।"

प्रेममार्ग सहज नहीं होता। साधक को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है —

"प्रेम पहार कठिन विध गढ़ा।
सा पै चढ़ै सीस सौं चढ़ा॥"

इस महाकाव्य में अज्ञात प्रियतम की झलक, गुरु महिमा, रहस्यवादी भावना तथा भारतीय एवं सूफी दर्शन का सम्मिश्रण किया गया है। इसकी कला एवं भाव पक्ष काफी उत्कृष्ट है।